(E - 101)

उठत प्रभात नाम, जिनजीको

(सवैया)

उठत प्रभात नाम, जिनजीको गाईये;
नाभिजीके नंद के, चरन चित लाईये। उठत० १

आनंद के कंदजी को, पूजित सुरिंद वृंद;
अैसो जिनराज छोड, ओरकुं न ध्याईये। उठत० २

उपशम रस वहे, आत्मिक आनंद वहे;
अैसे जिनराज के, चरण चित ध्याईये। उठत० ३

चेतनमें केली करे, आनंदकी मोज करे;
शांति लेते शांति देते अैसे प्रभु ध्याईये। उठत० ४

जनम अजोद्धा ठाम, माता मरुदेवा नाम;
लंछन वृषभ जाके, चरन सुहाईये। उठत० ५

पांचसे धनुष मान, दीपत कनकवान;
चोराशी पूरव लाख, आयुस्थिति पाईये। उठत० ६

आदिनाथ आदि देव, सुर नर सारे सेव;
देवनके देव प्रभु, शिवसुख दाईये। उठत० ७

प्रभुके पादारविंद, पूजत उमंग धरी;
मेटो दुःखदंद, सुखसंपत्ति बढाईये। उठत० ८